17 सितम्बर 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 12 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
सितम्बर (द्वितीय), 2018 (वीर नि.संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की -

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित गोष्ठियों के क्रम में दिनांक 26 अगस्त को '**रक्षाबन्धन पर्व**' विषय पर गोष्ठी आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर उपस्थित थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से अंकुर जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं शास्त्री वर्ग से प्रांजल जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के प्रशांत जैन व अमन जैन ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने एवं ग्रंथ भेंट गौरवजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 2 सितम्बर को '**चारित्तं खलु धम्मो**' विषय पर गोष्ठी आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रथम स्थान पर मयंक जैन बण्डा (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर अमन जैन आरोन (शास्त्री प्रथम वर्ष) व हरीश जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण वैभव जैन, सागर (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के शाश्वत जैन बड़ामलहरा व पीयूष जैन मडावरा ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने एवं ग्रंथ भेंट गौरवजी शास्त्री ने किया।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की -

विशेष प्रतियोगिता संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय की विशेष प्रतियोगिता दिनांक 6 सितम्बर को '**प्रथमानुयोग के प्रसंगों में सिद्धांत**' विषय पर आयोजित हुई, जिसमें 11 वक्ताओं ने प्रथमानुयोग के विशेष प्रसंगों को सुनाकर उसमें से क्रमबद्धपर्याय, निमित्त-उपादान, अकर्तावाद, पंचभाव, चार अभाव, पांच समवाय, संसार की विचित्रता आदि सिद्धांतों पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रतीक जैन विदिशा (शास्त्री तृतीय वर्ष), संयम जैन दिल्ली एवं अंकुर जैन खड़ैरी (शास्त्री प्रथम वर्ष) चुने गये। निर्णायक के रूप में अच्युतकांतजी शास्त्री उपस्थित थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण आयुष जैन मडदेवरा ने एवं संचालन शाश्वत जैन बड़ामलहरा ने किया।

टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों की -

अनुपम उपलब्धियाँ

(1) संस्कृत कॉलेज की राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के निम्न छात्रों ने स्थान प्राप्त किया है -

● हितंकर जैन पुत्र डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री ने बैडमिन्टन में प्रथम स्थान ● शाश्वत जैन पुत्र श्री राजीवकुमारजी जैन ने अंग्रेजी वाद-विवाद (विपक्ष) में प्रथम स्थान ● यश जैन पुत्र श्री योगेशकुमारजी जैन अंग्रेजी वाद-विवाद (पक्ष) में प्रथम स्थान ● अक्षत जैन पुत्र श्री सुनीलजी शास्त्री ने हिन्दी वाद-विवाद (पक्ष) में प्रथम स्थान ● पीयूष जैन पुत्र श्री मनोजजी जैन ने हिन्दी वाद-विवाद (विपक्ष) में प्रथम स्थान एवं ● संयम पुजारी पुत्र श्री कमलेशकुमारजी पुजारी ने संस्कृत वाद-विवाद (विपक्ष) में प्रथम स्थान।

(2) राजस्थान तृतीय श्रेणी अध्यापक हेतु श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के निम्न स्नातकों का चयन हुआ है -

● सौरभ शास्त्री फूप (41वाँ स्थान) ● हर्षित शास्त्री खनियांधाना (130वाँ स्थान) ● नरेश शास्त्री भगवाँ ● राहुल शास्त्री खड़ैरी।

इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा की -

नवीन कार्यकारिणी गठित

उदयपुर (राज.) : यहाँ नेमिनाथ जैन कॉलोनी सेक्टर-3 में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन के चुनाव संपन्न हुए, जिसमें नवीन कार्यकारिणी का गठन सर्वसम्मति से प्रदेशाध्यक्ष डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री व प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसाद शास्त्री ने करवाया। फैडरेशन में श्री निर्मल अखावत (अध्यक्ष), श्री पवन अखावत (उपाध्यक्ष), श्री पारस कचरावत (मंत्री), श्री रौनक सिंघवी (कोषाध्यक्ष), रौनक गोर्द्धनोत (प्रचार मंत्री), श्री अंकुर सिंघवी (सांस्कृतिक मंत्री), श्री जितेन्द्र मेहता (संगठन मंत्री), श्री भूपेन्द्र मेहता व श्री अजित गोर्द्धनोत (संरक्षक) का चयन किया गया। **महिला फैडरेशन में** - श्रीमती प्रतिभा जैन (अध्यक्ष), श्रीमती हेमलता जैन (उपाध्यक्ष), श्रीमती वीणा अखावत (मंत्री), श्रीमती ज्योति जैन (कोषाध्यक्ष), पायल जैन (प्रचार मंत्री), रेणु जैन (सांस्कृतिक मंत्री), वर्षा मेहता (संगठन मंत्री), श्रीमती भगवती जैन व श्रीमती संभव जैन (संरक्षक) जैन का चयन किया गया।

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

17

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

इसे सहज संयोग ही कहा जाएगा कि इस कलिकाल में सदियों से समय-समय पर दिगम्बर धर्म के मूलभूत विस्मृत सिद्धांतों को पुनः प्रकाश में लाने का अधिकांश श्रेय जन्मजात गैर-दिगम्बरों (परिवर्तित दिगम्बरों) को ही मिला है।

अष्टसहस्री के कर्ता श्री विद्यानन्दि आचार्य से लेकर श्री कानजीस्वामी तक सदियों पुराना जैन-साहित्य का इतिहास इसका साक्षी है। इस सदी में क्रमबद्धपर्याय जैसे क्रान्तिकारी परमशान्ति-दायक सिद्धान्त के उद्घाटक के रूप में श्री कानजीस्वामी को सदैव याद किया जाएगा।

यद्यपि स्वामीजी जन्मजात दिगम्बर जैन नहीं थे, परन्तु भली होनहार के कारण उन्हें दिगम्बर जैन आगम हाथ लग गया और उन्होंने अपने पूर्व संस्कार और वर्तमान पुरुषार्थ के बल से आगम में से जो जैनदर्शन के अनमोल सिद्धान्त निकाले; 'क्रमबद्धपर्याय' भी उनमें से एक सिद्धान्त है, जिसे उन्होंने अपने १३ प्रवचनों के माध्यम से विस्तार से समझाया है, जिसके पुस्तकाकार प्रकाशन का नाम 'ज्ञानस्वभाव ज्ञेयस्वभाव' है।

जैनदर्शन से सम्बन्धित होने से यहाँ इस विषय पर जिनागम के परिप्रेक्ष्य में सयुक्ति एवं सोदाहरण अनुशीलन अपेक्षित है।''

''क्रमबद्धपर्याय से आशय यह है कि इस परिणमनशील जगत की परिणमन व्यवस्था क्रमनियमित है। जगत में जो भी परिणमन निरन्तर हो रहा है, वह सब एक निश्चित क्रम में व्यवस्थितरूप से हो रहा है। स्थूल दृष्टि से देखने पर जो परिणमन अव्यवस्थित दिखाई देता है, गहराई से विचार करने पर उसमें भी एक सुव्यवस्थित व्यवस्था नजर आती है।''

ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहाँ मात्र यह नहीं कहा गया है कि पर्यायें क्रम से होती हैं; अपितु यह भी कहा गया है कि वे नियमितक्रम में होती हैं। आशय यह है कि **जिस द्रव्य की, जो पर्याय, जिस काल में, जिस निमित्त व जिस पुरुषार्थपूर्वक, जैसी होनी है; उस द्रव्य की, वह पर्याय, उसी काल में, उसी निमित्त व उसी पुरुषार्थपूर्वक वैसी ही होती है, अन्यथा नहीं – यह नियम है।**

जैसा कि कार्तिकेयानुप्रेक्षा में कहा गया है –

''जं जस्स जम्मि देसे जेण विहाणेण जम्मि कालम्मि।
णादं जिणेण णियदं जम्मं वा अहव मरणं वा।।३२१।।
तं तस्स तम्मि देसे तेण विहाणेण तम्मि कालम्मि।
को सक्कदि वारेदुं इंदो वा तह जिणिंदो वा।।३२२।।
एवं जो णिच्छयदो जाणदि दव्वाणि सव्वपज्जाए।
सो सद्दिट्ठी सुद्धो जो संकदि सो हु कुद्दिट्ठी।।३२३।।

जिस जीव के, जिस देश में, जिस काल में, जिस विधान से, जो जन्म अथवा मरण जिनदेव ने नियतरूप से जाना है; उस जीव के, उसी देश में, उसी काल में, उसी विधान से वह अवश्य होता है। उसे इन्द्र अथवा जिनेन्द्र कौन टालने में समर्थ है? अर्थात् उसे कोई नहीं टाल सकता है। इसप्रकार निश्चय से जो द्रव्यों को और उनकी समस्त पर्यायों को जानता है, वह सम्यग्दृष्टि है और जो इसमें शंका करता है, वह मिथ्यादृष्टि है।''

इसी क्रम में प्राचीन हिन्दी कवियों और टीकाकारों के द्वारा सशक्त भाषा में जो पद्य व गद्य में विचार व्यक्त किए गए हैं, मूलतः द्रष्टव्य हैं।

भैया भगवतीदास कहते हैं –

''जो-जो देखी वीतराग ने, सो-सो होसी वीरा रे।
बिन देख्यो होसी नहिं क्यों ही, काहे होत अधीरा रे।।
समयो एक बढ़ै नहिं घटसी, जो सुख-दुख की पीरा रे।
तू क्यों सोच करै मन कूड़ो, होय वज्र ज्यों हीरा रे।।''

कविवर बुधजन ने भी बहुत ही सरल व सशक्त भाषा में क्रमबद्धपर्याय की श्रद्धा के बल पर स्वयं को निर्भय होने की घोषणा की है। वे लिखते हैं –

''जा करि जैसें जाहि समय में, जो होतब जा द्वार।
सो बनिहै टरिहै कछु नाहीं, करि लीनों निरधार।।''
हमको कछु भय ना रे!

उक्त प्रकरणों में प्रायः सर्वत्र ही सर्वज्ञ के ज्ञान को आधार मानकर भविष्य को निश्चित निरूपित किया गया है और उसके आधार पर अधीर नहीं होने का एवं निर्भय रहने

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

21वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(शुक्रवार, दिनांक 5 अक्टूबर से शुक्रवार 12 अक्टूबर, 2018 तक)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के निर्देशन में आयोजित उक्त शिविर में विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन/अध्यापन किया जायेगा। अत: अन्य शिविरों से पृथक् यह शिविर जैनदर्शन के सूक्ष्म अध्ययन के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिये एक स्वर्ण अवसर होगा।

विद्वत्समागम :- **ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अच्युतकान्तजी शास्त्री जयपुर।**

{ आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है। }

नोट : कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें।

संपर्क - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)
फोन : 0141-2705581, 2707458 **E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

जागो जैनों जागो!!!

क्या हम अपने बच्चों को जैनधर्म के मूल सिद्धांतों को समझा पा रहे हैं?
क्या हम अपने बच्चों को वीतरागी भगवान का स्वरूप बता पा रहे हैं?
क्या हम अपने बच्चों को जिनवाणी माँ की लोरियाँ सुना पा रहे हैं?

यदि नहीं तो....

भविष्य में अल्पसंख्यक जैनसमुदाय पूर्ण विलुप्त हो जायेगा।
विशाल जिनमन्दिरों में दर्शन हेतु नई पीढी दिखाई नहीं देगी।
भगवान महावीर स्वामी से चली आ रही दिव्य देशना मौन हो जायेगी?

अभी भी समय है चेतो! चेतो!! चेतो!!!

वीतराग-विज्ञान पाठशालाएं ही इस संकट से उबारने के लिये सर्वोत्तम उपाय है।

पाठशालाएं खोलिये।

बच्चों को जैनत्व के संस्कार दीजिये।

भविष्य की पीढी को शाकाहारी,
संस्कारी, धार्मिक बनाने में
पूरा सहयोग दीजिये।

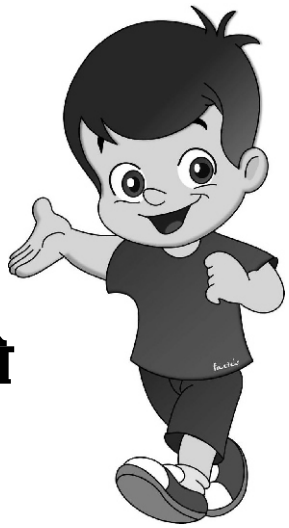

आइये आज ही बच्चों के लिये पाठशाला प्रारम्भ करें।

संपर्क :– श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)
मोबाइल नं. 7742364541 (नीशू शास्त्री) **Email - ptstjaipur@yahoo.com**

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की प्रेरणा से स्थापित
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन की यशोगाथा

"समय की ओर"

डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म का प्रदर्शन

रविवार, दिनांक 23 सितम्बर (अनंत चतुर्दशी)

को दोपहर 2.30 बजे से 3.40 बजे तक **अरिहंत** चैनल पर

यह गाथा है पाषाण से परमात्मा की। यह गाथा है बालक से विद्वान की।।

आप सब अवश्य देखें एवं अपने मित्रों, परिजनों को भी बतावें।

अरिहंत चैनल टाटा स्काई के चैनल नं. 1067, एयरटेल के 687, वीडियोकॉन के 489 एवं डिश टीवी के 1107 पर उपलब्ध है।

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (21)

आत्मा की अस्वीकृति स्वयं अपने प्रति हमारा छल है

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

आत्मा के प्रति अरुचि हमारा आत्मा के प्रति द्वेषभाव है और यही हमारी दुर्गति तथा संसार परिभ्रमण का मुख्य कारण है। यह हमारा जघन्यतम अपराध है पर इस ओर हमारा ध्यान ही नहीं है।

कैसी विडम्बना है कि श्रीगुरु जब भी करुणा करके हमें आइना दिखाने का प्रयास करते हैं, हमें अपना स्वरूप बतलाते हैं, हम आत्मा के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा देते हैं। हम स्वयं अपने होने से ही इन्कार कर देते हैं। हम कहने लगते हैं कि ''**आत्मा किसने देखा?**''

अरे भोले! नहीं देखा इसीलिये तो ये हाल है। अब तो देख ले!

क्या यह हमारे स्वयं अपने प्रति छल की पराकाष्ठा नहीं कि हम स्वयं अपने होने (अस्तित्व) से ही इन्कार कर देते हैं।

आपने देखा सुना होगा कि जब किसी को अपने बेटे से द्वेष हो जाता है तो वह बेटे के अस्तित्व से ही इन्कार करने लगता है, वह कहने लगता है कि ''मेरा कोई बेटा नहीं है''। इसी प्रकार यदि कोई स्वयं अपने (आत्मा के) होने से इन्कार करने लगे तो इसे द्वेष के अतिरिक्त और क्या नाम दिया जा सकता है?

जरा इस ''भगवान आत्मा का'' (हमारा) दुस्साहस तो देखिये, जीते-जागते अनन्त गुणों के स्वामी भगवान आत्मा के अस्तित्व से ही इन्कार? जरा इसकी बेशर्मी तो देखिये, इसे सफेद झूठ बोलने में भी संकोच नहीं। सपनों की सच्चाई खोजने के लिये लालायित इस जीव को स्वयं की सच्चाई (अस्तित्व) स्वीकार नहीं।

किसी साहित्यकार ने कहा भी है न कि ''**कैसा गजब हो गया है, खोजने वाला खो गया है। खोजने वाला खोजने वाले को खोज रहा है और खोजने वाले को खोजने वाला नहीं मिल रहा है**''।

एक बात समझ लेना! तू आत्मा का अस्तित्व स्वीकार करे या न करे इससे किसी और को कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। तेरे आत्मा को अस्वीकार करने से किसी का कुछ नहीं लुट गया है और स्वीकार कर लेने से किसी को कोई निधियाँ मिलने वाली नहीं हैं। यह सिर्फ तेरे अपने हित-अहित की बात है। संसार में अनन्त जीवराशि विद्यमान है, एक तेरे मोक्ष चले जाने से न तो संसार खाली हो जाने वाला है और न ही सिद्धशिला में विद्यमान अनन्त सिद्ध परमात्मा में कोई वृद्धि हो जाने वाली है, न ही किसी का कोई भला हो जाने वाला है। यदि तुझे परमसुखी होना है तो मायाचारी छोड़ और अपने कल्याण का उपाय कर ले!

यदि आत्मा है ही नहीं तो स्व कौन, पर कौन, स्वभाव और विभाव क्या, सुख-दुःख भी कहाँ, बंध और मोक्ष भी कहाँ? पर इन सबका अस्तित्व तो है, तब आत्मा के अस्तित्व से कैसे इन्कार कर सकता है?

यदि तुझे आत्मा दिखाई नहीं देता, आत्मा का अस्तित्व स्वीकार नहीं, तो तू कौन है? कोई अचेतन पदार्थ तो ऐसा करता नहीं है। **भगवान आत्मा को अपने अस्तित्व की यह कड़ी चुनौती कहीं बाहर से नहीं, स्वयं अपने अन्दर से मिली है। इसका निराकरण भी कहीं बाहर से नहीं होगा वरन् स्वयं हमें ही करना होगा।**

यहाँ एक प्रश्न उठना स्वाभाविक है। कोई कह सकता है कि हम इतने भी भोले नहीं हैं कि आत्मा के अस्तित्व से सर्वथा ही इन्कार कर दें, अभी तो हम हैं तब आखिर हम ऐसा कैसे कर सकते हैं?

हमारा संदेह तो आत्मा की अनादि-अनन्तता पर है। हमारा प्रश्न तो यह है कि हमारे इस जीवन से पहले भी हम थे, हमारा यह आत्मा था और इस जीवन के बाद भी यह रहेगा इस बात की क्या गारंटी है?

तेरी बात तो ठीक लगती है। मेरा भी एक सवाल है, ''क्या तू अपने सभी काम गारंटी होने पर ही करता है, बिना गारंटी के कुछ भी नहीं करता है?

बरसात के दिनों में जब तू छाता लेकर घर से बाहर निकलता है तब तुझे इस बात की गारंटी कौन देता है कि आज बरसात होने वाली है?

जब तू कल की या 15 दिन बाद की यात्रा की टिकिट बुक करवाता है तब तुझे इस बात की गारंटी कौन देता है कि तू तब तक जीवित रहेगा ही और यात्रा भी करेगा ही।

जब तू अपने घर के आँगन में एक पौधा रोपता है तब कौन तुझे इस बात की गारंटी देता है कि एक दिन यह फल देगा ही और उन फलों के उपभोग के लिये तू भी विद्यमान रहेगा ही।

जब भावी जीवन के इंतजाम के लिये शिक्षा पाने में अपना बचपन और यौवन झोंक डालता है तथा बुढापे के इंतजाम के लिये आज अपना पेट काटकर धन संचय करता है तब तुझे कौन इस बात की गारंटी देता है कि तेरा बुढापा आयेगा ही, तू 60-70 या 80 वर्ष तक जीवित रहेगा।

क्या कभी किसी डॉक्टर ने तुझे गारंटी दी है कि वह तेरा

ऑपरेशन करेगा और तू ठीक हो ही जायेगा? वहाँ तो तू जितना अधिक आश्वासन पाने का प्रयास करता है, डॉक्टर उतना ही अधिक जिम्मेदारी से छिटकता जाता है। वह कहता है कि ''मौत मो मात्र ठोकर लगने से या सुई चुभने से भी हो सकती है फिर यह तो बड़ा ऑपरेशन है, इसकी गारंटी कौन ले सकता है?'' तब भी तू स्वयं अपनी रिस्क पर ऑपरेशन करवाने के बॉन्ड के कागजों पर साइन करके, स्वयं अपनी छाती पर चाकू चलाने की फीस चुकाकर एक आज्ञाकारी बालक की भाँति चुपचाप ऑपरेशन टेबल पर लेट जाता है, कटने के लिये।

कैसी विडम्बना है कि इस अमर आत्मा को मौत तो स्वीकृत है पर अमरत्व नहीं।

तुझे जगत में आज तक किस–किस बात की गारंटी मिली है और मिली हुई गारंटी पूरी हुई है? तूने कौनसा काम गारंटी के अभाव में रोक दिया है? तब सिर्फ यही आत्मकल्याण का काम क्यों गारंटी नहीं होने के बहाने से रोक दिया जाता है?

हम भी कितने भोले हैं कि हम जगत के अज्ञानी, अक्षम, कमजोर, झूठे, स्वार्थी और मक्कार लोगों द्वारा दी गई गारंटी पर तो भरोसा कर लेते हैं; पर वीतरागी सर्वज्ञदेव द्वारा प्रदत्त आत्मा की (अपनी) अनादि–अनन्तता की गारंटी पर हमें भरोसा नहीं।

अरे कपटी, अब तो छल त्याग दे! क्या तू नहीं जानता है कि तेरे इस कपट भरे व्यवहार का शिकार कोई और नहीं वरन् तू स्वयं ही है।

अरे भोले! तू हमसे क्या पूछता है कि इस बात की क्या गारंटी है कि आत्मा अनादि–अनन्त है? तू ही बतला न कि इस बात की क्या गारंटी है कि आत्मा अनादि–अनन्त नहीं है? क्या तू इस बात की गारंटी दे सकता है?

नहीं न?

बात बराबरी पर आ गई। गारंटी उनके पास भी नहीं है और तेरे पास भी नहीं है, चलो एक बार हम यही मान लें कि दोनों ओर की संभावनाएं 50–50 हैं। अब तू किसकी बात को स्वीकार करेगा? **एक ओर वीतरागी सर्वज्ञदेव हैं और दूसरी ओर तू अल्पज्ञ एवं रागी–द्वेषी। किसकी बात सत्य होने की संभावना प्रबल है, उनकी या तेरी?**

एक बात और!

जरा विचार तो कर तेरा हित किसमें है? आत्मा को अविनाशी मानने में या नश्वर मानने में।

यदि तेरी ही बात को सत्य माना जाये तो इसका परिणाम यह होगा कि इस जीवन के बाद तू नष्ट हो जायेगा, तेरा अस्तित्व ही नहीं रहेगा।

क्या तुझे यही अभीष्ट है, क्या तुझे यह स्वीकार है? क्या तुझे तेरा नष्ट हो जाना स्वीकार है?

उपरोक्त मान्यता का एक बड़ा दुष्परिणाम यह है कि यदि तू गलत साबित हुआ, यदि इस जीवन के बाद भी तेरा (आत्मा का) अस्तित्व बना रहा, तब तुझे अपने भविष्य के लिये बिना किसी तैयारी के ही यहाँ से जाना होगा, क्योंकि आत्मा को नश्वर मानकर तूने अपने भविष्य के लिये कोई तैयारी की ही नहीं।

क्या यह एक छोटी सी संभावना के लिये भी बड़ी–बड़ी तैयारियाँ और व्यवस्थाएं करने वाले हम जैसे लोगों के स्वभाव और मानसिकता के अनुकूल है?

कैसी नादानी भरी बातें करता है तू! तुझे अनन्त आकाश (असंख्यात प्रदेशी) स्वीकार है, तुझे अनन्तकाल स्वीकार है, तुझे ऐसे वे अनंतानंत पुद्गल स्वीकार हैं जो ना ही कभी नये उत्पन्न होंगे और ना ही कभी नष्ट होंगे; पर बस तुझे तू स्वयं स्वीकार नहीं, आत्मा स्वीकार नहीं। क्या यह तेरा स्वयं अपने प्रति अनंतानुबंधी क्रोध नहीं?

अरे! जिस जीवन में आत्मा के अनन्तकाल तक अनन्त सुखी होने का इंतजाम किया जा सकता है, उस अवसर को गफलत में यूं ही गंवाकर आत्मा को अनन्तकाल तक अनन्त संसार में भटकने के लिये यूं ही छोड़ देना उचित है? क्या तुझे स्वयं अपने साथ यह छलावा स्वीकार है?

रे भव्य! अब छोड़ यह मायाचार और अपने स्वरूप का निर्णय कर। जिनवर कथित आत्मस्वरूप का अभ्यास कर, स्वयं विचार कर और यह प्रक्रिया तब तक जारी रख जब तक कि तेरे निष्कर्ष जिनवाणी से न मिलें।

तेरा कल्याण होगा... ●

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

14 से 25 सित.	बेलगांव (कर्नाटक)	दशलक्षण महापर्व
5 से 12 अक्टू.	जयपुर	शिक्षण शिविर
16 से 21 अक्टू.	पोन्नूर	तमिलनाडु के तीर्थों की यात्रा
31 अक्टूबर	मुम्बई	शिखरजी यात्रा कार्यक्रम
4 से 8 नवम्बर	देवलाली	दीपावली

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

(पृष्ठ 2 का शेष...)

का उपदेश दिया गया है।

स्वामी कार्तिकेय ने तो ऐसी श्रद्धावाले को ही सम्यग्दृष्टि घोषित किया है और इसप्रकार नहीं माननेवाले को मिथ्यादृष्टि कहने में भी उन्हें किंचित् भी संकोच नहीं हुआ। इसप्रकार हम देखते हैं कि 'क्रमबद्धपर्याय' की सिद्धि में सर्वज्ञता सबसे प्रबल हेतु हैं।

सर्वज्ञ को धर्म का मूल कहा गया है। जो व्यक्ति सर्वज्ञ भगवान को द्रव्यरूप से, गुणरूप से और पर्यायरूप से जानता है, वह अपने आत्मा को भी जानता है। जब सर्वज्ञता हमारा लक्ष्य है, प्राप्तव्य है, आदर्श है, उसे प्राप्त करने के लिए सारा यत्न है तो फिर उसके सच्चे स्वरूप को तो समझना ही होगा, उसकी उपेक्षा कैसे की जा सकती है।

'सर्वज्ञता' और 'क्रमबद्धपर्याय' परस्परानुबद्ध हैं। एक का निर्णय व सच्ची समझ, दूसरे के निर्णय के साथ जुड़ी हुई है। दोनों का निर्णय ही सर्वज्ञस्वभावी निज आत्मा के अनुभव के सम्मुख होने के साधन है।

जिन्हें क्रमबद्धपर्याय में पुरुषार्थ निष्क्रिय अथवा लुप्त होता दिखता है, उन्हें पुरुषार्थ की परिभाषा और स्वरूप का जैनदर्शन के आलोक में पुनर्वालोकन करना होगा।

लौकिक पुरुषार्थ से जैन दर्शन के अनुसार की गई पुरुषार्थ की व्याख्या ही जुदी है। जैसे कि लोक में येनकेन प्रकारेण धनार्जन करने को अर्थ पुरुषार्थ कहते हैं जबकि जैनदर्शन इसे पुण्याधीन संयोग मानता है और धन में सुख-शान्ति नामक गुण ही नहीं है अतः इससे ममत्व त्याग करने का संदेश देते हुए उसे धूल मिट्टी का ढेर कहता है इसके विरुद्ध छह द्रव्यों के स्वरूप की समझ के प्रयत्न को एवं लोभ कषाय के संवरण को अर्थ पुरुषार्थ कहता है। ऐसा पुरुषार्थ सर्वज्ञ की श्रद्धा और क्रमबद्धपर्याय की यथार्थ समझ से ही जागृत होता है। इस संदर्भ में कविवर बनारसीदास ने जो चारों पुरुषार्थों का स्वरूप लिखा है, वह मूलतः द्रष्टव्य है।

(क्रमशः)

सोश्यल मीडिया द्वारा तत्त्वप्रचार

समयसार पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन

अब WhatsApp पर भी उपलब्ध हैं।

7297973664

को अपने मोबाईल में PTST प्रवचन के नाम से SAVE करें।

अपना नाम एवं स्थान लिखकर 7297973664 पर WhatsApp करें।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी आप हमारे facebook पेज pandit todarmal smarak trust के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

www.facebook.com/ptst.jaipur

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी एवं सत्साहित्य का ऑनलाईन ऑर्डर देने हेतु visit करें -

www.ptst.in

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों का लाभ आप हमारे YouTube चैनल PTST के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

www.youtube.com/user/todarmalsmaraktrust

जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने अथवा और भी विविध विषयों को डॉ. संजीवकुमार गोधा द्वारा YouTube पर सुनने के लिये निम्न लिंक का प्रयोग करें -

www.youtube.com/c/drsanjeevgodha

... और तत्त्वनिर्णय न करने में किसी कर्म का दोष है नहीं, तेरा ही दोष है; परन्तु तू स्वयं तो महन्त रहना चाहता है और अपना दोष कर्मादिक को लगाता है, सो जिनआज्ञा माने तो ऐसी अनीति सम्भव नहीं है। **- मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 311**

प्रकाशन तिथि : 13 सितम्बर 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com